कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन

अध्याय - 1 रचनात्मक-लेखन

पाठ का सारांश

जब हम अपने मित्रों, संबंधियों से किसी घटना, किसी अविस्मरणीय पल या किसी विचार आदि के बारे में चर्चा करते हैं तो उन घटनाओं, पलों, खयालों आदि के साथ-साथ उससे जुड़े वातावरण, दृश्यों आदि को भी अपने मस्तिष्क में रखते हैं। इन्हीं विचारों, जेहन में बसे दृश्यों, तस्वीरों और वातावरण आदि को जब हम व्यवस्थित शब्दों में पिरोकर एक लेख की शक्ल दे देते हैं तो वह रचनात्मक लेखन कहलाता है।

वास्तव में जिन बातों को कहना हमारे लिए मुश्किल नहीं होता उसे उसी जोश, उत्साह, भाव के साथ लिखना वाकई मुश्किल होता है, किंतु जो आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप में अभिव्यक्ति का अभ्यास करते हैं उनके लिए अपने विचारों, घटित घटनाओं को शब्दों के द्वारा उकेर पाना मुश्किल नहीं होता। जो लोग रटने पर निर्भर रहते हैं वे स्वयं की अभिव्यक्ति के अभ्यास का अवसर खो देते हैं। रटने की बुरी प्रवृत्ति के कारण उन्हें स्वयं को लिखित रूप में व्यक्त करने का अवसर ही नहीं मिलता।

मौलिक लेखन के प्रयास एवं अभ्यास को बाधित करने वाली यह निर्भरता (दी हुई पाठ्य सामग्री को रटना) हमारे अंदर लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित नहीं होने देती। इसलिए हमें उपलब्ध सामग्री के विषयों को छोड़कर (वे उदाहरण के लिए दिए गए हैं, रटने के लिए नहीं) नई तरह के अप्रत्याशित विषयों पर कलम चलाने का अभ्यास करना चाहिए। यह अभ्यास हमें मौलिक लेखन की ओर अग्रसर करेगा जिससे हमारी रचनात्मकता उभरकर नव-सृजन के रूप में प्रस्फुटित होगी।

इस प्रकार के लेखन के लिए दिए गए विषयों की संख्या असीमित हो सकती है। उनकी प्रवृत्ति भी भिन्न-भिन्न हो सकती है। उन विषयों की माँगें और दिशाएँ भी अलग-अलग हो सकती हैं। एक ही विषय पर सब का प्रस्तुतीकरण भी अलग-अलग हो सकता है। कोई स्मृतियों के गहरे सागर से मोती ढूँढ़कर लाएगा तो कोई ताजे अनुभव से जा जुड़ेगा, कोई सैद्धांतिक दृष्टि से कलम चलाएगा तो कोई सूचनात्मक। विषय की इन माँगों के परिणामस्वरूप आप जो लिखेंगे कभी वह कोई निबंध बन पड़ेगा, कभी कोई संस्मरण, कभी रेखाचित्र तो कभी यात्रावृत्तांत। एक ही विषय पर अनेक व्यक्ति अनेक प्रकार से सोच सकते हैं।

इस रचनात्मक कौशल के अंतर्गत तैयार कोई सामग्री उपलब्ध नहीं होगी। सिर्फ नए और अप्रत्याशित (जिसकी आशा न हो) विषय दिए जाएँगे, हमें स्वयं कुछ नया सोचने, लिखने का प्रयास करना है।

यहाँ इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तावित सभी विषय प्रत्येक दृष्टि से खुले हुए हैं। आप उसे किसी भी दिशा की ओर मोड़कर रचनात्मक लेख लिख सकते हैं। दिए गए विषयों को पढ़कर आपके मन में जो ख्याल आ रहे हैं आप उस पर मौलिक लेखन के लिए स्वतंत्र हैं। यही आपका रचनात्मक कौशल होगा। यहाँ पर मात्र उदाहरण दिए गए हैं।

❑❑

अध्याय - 2 पत्र-लेखन (औपचारिक)

स्मरणीय बिंदु

पत्र-लेखन की कला अत्यंत प्राचीन है। मनुष्य के पठन-पाठन के साथ ही इस विद्या का प्रारंभ हुआ था। पत्र वह संदेश वाहक दूत है, जो हमारे संदेश दूर बैठे परिचितों-अपरिचितों तक पहुँचाता है। इसके द्वारा मन की बात लिखकर विस्तार से प्रकट की जा सकती है। पत्र को अगर 'मन का आईना' कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। इसलिए आज के कंप्यूटर युग में भी पत्र का हमारे जीवन में एक विशेष महत्व है।

अच्छे पत्र की विशेषताएँ

वास्तव में पत्र लिखना भी एक कला है। इसलिए एक अच्छे पत्र में निम्नलिखित विशेषताओं का होना आवश्यक है–

(1) पत्र की भाषा-शैली सरल हो।

(2) पत्र में संक्षिप्तता, क्रमबद्धता तथा प्रभावान्वित हो।

(3) पत्र में विनम्रता एवं बाह्य आकर्षण हो।

पत्रों के प्रकार

पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—

(1) अनौपचारिक अथवा पारिवारिक पत्र—इसके अंतर्गत परिवार के लोगों, मित्रों व निकट संबंधियों को लिखे जाने वाले पत्र आते हैं।

(2) औपचारिक पत्र—इसके अंतर्गत आवेदन-पत्र, संपादकीय पत्र, प्रार्थना-पत्र तथा व्यावसायिक पत्र आदि आते हैं।

❑❑

अध्याय - 3 कहानी/नाटक की रचना-प्रक्रिया

स्मरणीय बिंदु

(i) कहानी और कहानी की रचना-प्रक्रिया

कहानी से हम सब किसी-न-किसी प्रकार से बचपन से ही जुड़े होते हैं। हर व्यक्ति कहानी सुनना और सुनाना पसंद करता है और फिर दादी और नानी के किस्से कहानियों की तो बात ही क्या है? शायद ही कोई उससे अछूता हो।

कहानी हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग है। हम सभी परस्पर एक-दूसरे को अपनी कहानी किसी-न-किसी रूप में सुनाते हैं क्योंकि हर व्यक्ति में अपने सुख-दु:ख बाँटने की स्वाभाविक इच्छा होती है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति में कहानी लिखने का मूल भाव व्याप्त होता है। कुछ लोग इस कला को विकसित करके श्रेष्ठ कहानीकार बन जाते हैं किंतु कुछ इसे विकसित नहीं करते।

कहानी की रचना-प्रक्रिया एक कला है। इस कला के अनेक ऐसे रोचक तथ्य हैं जिनके विषय में हम इस अध्याय में अध्ययन करेंगे और उन्हें समझेंगे।

(ii) नाटक एवं नाटक की रचना-प्रक्रिया

साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति नाटक भी एक महत्वपूर्ण साहित्यक विधा है। यह नाटक विधा 'दृश्यता' से संबंधित होने के कारण विशिष्ट है। हमारी भारतीय नाट्य-परंपरा में नाटक को 'दृश्य काव्य' कहा गया है। जहाँ कहानी, कविता आदि विधाएँ अपने लिखित रूप में ही अंतिम चरण को प्राप्त करती हैं। वहीं नाटक इससे एक कदम आगे बढ़कर अपनी विशिष्टता सिद्ध करता है अर्थात् जब नाटक का मंचन हमारे सामने आता है तब उसमें संपूर्णता आती है। नाटक पढ़ने, सुनने के साथ ही 'दृश्यता' के तत्व को भी अपने भीतर समेटे हुए है। इस अध्याय के अंतर्गत नाटक की मूल विशेषताओं पर लिखे गए प्रश्नों और उत्तरों का अध्ययन करेंगे।

❑❑

अध्याय - 4 समाचार लेखन/फीचर लेखन/आलेख लेखन

(ii) फीचर लेखन

मूल रूप में लैटिन भाषा के 'फैक्ट्रा' शब्द से निर्मित 'फीचर' शब्द का अर्थ 'स्वरूप' या 'रूपरेखा' है। किसी भी समाचार-पत्र के प्रमुख चार अंगों—समाचार, फीचर, लेख एवं चित्र में फीचर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

फीचर—फीचर लेखन एक रचनात्मक कला है। इसे रुचिकर और सजीव बनाने के लिए उसमें विषय से जुड़े पात्रों का होना आवश्यक होता है। फीचर को उन्हीं पात्रों के माध्यम से आगे बढ़ाते हुए उस विषय-विशेष के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है। फीचर को प्रस्तुत करने का अंदाज़ सजीवता लिए हुए, मनोरंजक और सूचनात्मक होता है।

फीचर लेखन : एक परिचय

फीचर की परिभाषा—अनेक विद्वानों ने फीचर की परिभाषा अलग-अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत की है। कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

डॉ. विवेकी राय के अनुसार—''फीचर समस्यात्मक निबंध-रूपक है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की नवीनतम हलचलों का शब्द-चित्र होता है।''

डॉ. पुरुषोत्तम दास टंडन के अनुसार—''फीचर एक प्रकार का गद्य गीत है, जो नीरस, लंबा और गंभीर नहीं हो सकता क्योंकि मनोरंजक और जानदार होना उसकी विशेषता है।'' अर्थात फीचर सहज, सरस और दिलचस्प गद्य है जिसमें ऐसी लयात्मकता होती है कि पाठक एक ही बैठक में आद्यंत पढ़ जाए।

फीचर लेखन के गुण—एक श्रेष्ठ फीचर लेखन के निम्नलिखित गुण होते हैं—

(i) विश्वसनीयता

(ii) सरसता एवं सहजता

(iii) प्रचलित शब्दावली का प्रयोग

(iv) सरलता एवं संक्षिप्तता

(v) प्रासंगिकता।

फीचर लेखन के उद्देश्य—फीचर लेखन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(i) फीचर लेखन का प्रमुख उद्देश्य ज्ञानवर्द्धन है। यह पाठकों को किसी विषय की गहनता से परिचित कराता है।

(ii) फीचर पाठकों को सोचने-समझने के लिए प्रेरित करता है।

(iii) फीचर पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करने के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक स्तर पर मनोरंजन भी करता है।

फीचर लेखन का क्रम—फीचर लेखन का क्रम इस प्रकार है—

(i) शीर्षक।

(ii) आमुख या भूमिका।

(iii) विषय का विस्तार या विवेचन।

(iv) निष्कर्ष या समापन।

फीचर लेखन के तत्व—फीचर लेखन के निम्नलिखित तत्व होते हैं—

(i) कल्पना—विषय का निर्धारण कर लेने के पश्चात फीचर लेखक विषयानुरूप एक रोचक दृष्टिकोण अपनाते हुए फीचर लिखता है तथा अपनी प्रतिभा और कल्पना के द्वारा कुछ नया एवं मौलिक फीचर लेखन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

(ii) तथ्य—चूँकि फीचर लिखते समय तथ्यों के आधार पर ही बात कही जाती है इसलिए तथ्यों की प्रस्तुति सरस, रोचक और मनोरंजक होनी चाहिए। फीचर में तथ्यात्मक सत्य के साथ रचनात्मकता का विशिष्ट समावेश होता है।

(iii) लेखनकला—वास्तव में फीचर चिंतन का तथ्यात्मक एवं रचनात्मक प्रस्तुतीकरण है। इसमें सरल, संक्षिप्त, सरस एवं रोचक शब्दों का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जाता है। अपनापन लिए हुए इसकी भाषा में मुहावरों, लोकोक्तियों एवं सूक्तियों का सही एवं सार्थक प्रयोग किया जाना चाहिए।

फीचर और समाचार में अंतर—

- फीचर लेखन में भावनाओं तथा विचारों का आधिक्य होता है, जबकि समाचारों में शुद्धता तथा वस्तुनिष्ठता पर जोर होता है।
- फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड-शैली का प्रयोग नहीं होता। इसकी लेखनशैली कथात्मक होती है।
- फीचर पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम नहीं बताता, जबकि समाचार का संबंध तात्कालिक घटनाओं से होता है।
- फीचर की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक व मन को छूने वाली होती है, जबकि समाचार की भाषा में सपाटबयानी होती है।
- फीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। जबकि समाचार शब्दसीमा में बँधे होते हैं।

फीचर लेखन संबंधी मुख्य बातें

फीचर लेखन संबंधी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

- फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें विषय से जुड़े लोगों की उपस्थिति अनिवार्य है।
- फीचर कोई शोध रिपोर्ट नहीं है, अत: उसे सूचनात्मक होने के साथ-साथ मनोरंजक भी होना चाहिए।
- फीचर कथात्मक विवरण एवं विश्लेषण होता है, लेकिन इसे किसी बैठक की कार्यवाही या विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।
- फीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होना चाहिए और इस उद्देश्य के इर्द-गिर्द ही सभी प्रासंगिक सूचनाएँ, तथ्य एवं विचार गुँथे होने चाहिए।
- फीचर में शामिल तथ्यों को अभिव्यक्त करने का ढंग ऐसा हो कि पाठक को लगने लगे कि वही देख एवं सुन रहा है।
- फीचर में प्रारंभ से अंत तक प्रवाह एवं गति बनी रहनी चाहिए। अत: प्रत्येक अनुच्छेद अपने पूर्व के अनुच्छेद से सहज रूप से संबंधित होना चाहिए।

(iii) आलेख लेखन

पाठ का सारांश

आलेख—आलेख एक गद्य-लेखन विद्या है जिसे वैचारिक गद्य-रचना कहा जा सकता है। एक ऐसी 'विषय प्रधान' संयुक्त रचना आलेख कहलाती है जिसमें तथ्यपूर्ण, विश्लेषणात्मक जानकारी होती है। आलेख गद्य-लेखन में लेखक अपने विचारों को स्वतंत्रतापूर्वक समाज के समक्ष रख सकता है।

एक अच्छा 'आलेख' नवीनतम और ताज़गी से संपन्न होना चाहिए। उसमें जिज्ञासा उत्पन्न करने की शक्ति होनी चाहिए। विचार इतने स्पष्ट तथा बेबाक होने चाहिए कि पाठक उन्हें पढ़ता चला जाए। भाषा अत्यंत सरल, सुगम तथा प्रभावी होनी चाहिए। इसमें कथा-शैली के बजाय विवेचन और विश्लेषण-शैली का प्रयोग करना चाहिए।

प्राय: 'आलेख' ज्वलंत मुद्दों, प्रसिद्ध विषयों, महत्वपूर्ण व्यक्तियों, चरित्रों तथा अवसरों पर लिखे जाते हैं।

अच्छे आलेख के गुण—

(i) भाषा-शैली में कसावट, (ii) विषय की अनुकूलता, (iii) प्रसंगानुसार उद्धरणों, दृष्टांतों, सूक्ति वाक्यों का प्रयोग।

आलेख के अंग

आलेख के मुख्य अंगों में भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा एवं निष्कर्ष उल्लेखनीय हैं। सबसे पहले इसमें शीर्षक के अनुकूल भूमिका लिखी जाती है जो कि बहुत लंबी न हो। विषय के प्रतिपादन के अंतर्गत विषय का वर्गीकरण, आकार, रूप एवं क्षेत्र आते हैं। इसके अंतर्गत विषय के क्रमिक विकास का प्रयोजन प्रमुख होता है। इसके अतिरिक्त, संबंधित विषय में तारतम्यता एवं क्रमबद्धता का विशेष महत्व है। इसके बाद विषय-वस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण करके अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

आलेख-लेखन में ध्यान देने योग्य बातें—आलेख लिखते समय निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. आलेख लिखने से पूर्व संबंधित विषय का पर्याप्त अध्ययन करना चाहिए।
2. संबंधित विषय पर चिंतन-मनन करके विषय-वस्तु का समुचित विश्लेषण करना चाहिए।
3. विषय-वस्तु से संबंधित आँकड़ों, संस्तुतियों एवं प्रमाण हेतु दिये जाने वाले उदाहरणों को पूर्व में ही सुनिश्चित कर लेना चाहिए, जिससे उन्हें आलेख में यथास्थान प्रस्तुत किया जा सके।
4. तार्किक रूपरेखा के तहत आलेख शृंखलाबद्ध होना चाहिए तथा विषयांतर से बचने का यथासंभव प्रयास किया जाना चाहिए।
5. आलेख की भाषा सरल, सहज, बोधगम्य, रोचक एवं आकर्षक होनी चाहिए। एक परिच्छेद में ही भाव अभिव्यक्त करने की कोशिश करनी चाहिए।
6. आलेख की समाप्ति करते समय समग्र लेख का निचोड़ एवं सारांश प्रभावशाली शब्दों में व्यक्त करना चाहिए।
7. आलेख के अंतर्गत विरोधाभास, दोहराव, तथ्यों की संदिग्धता, असंबद्धता, असंतुलन, पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण आदि दोषों से यथासंभव बचने की कोशिश करनी चाहिए।

काव्य खंड

अध्याय - 1 शमशेर बहादुर सिंह

पाठ का सारांश

'उषा' कविता का सारांश

इस कविता में कवि ने सूर्योदय के पूर्व उषाकाल में पल-पल होते आकाश के परिवर्तन को विभिन्न उपमानों के माध्यम से उभारा है। सुबह का आकाश शंख के समान कभी नीला तो कभी राख से लीपे हुए चौके की तरह गीला लगता है। सूर्य की आकाश में बिखरी लालिमा से आकाश ऐसा लगता है मानो किसी ने काली सिल को लाल केसर से धो दिया हो। उदित होता सूर्य स्लेट पर लाल खड़िया से बने निशान की तरह चमकता है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे नीले जल में कोई गोरी स्नान कर रही हो। सूर्योदय होने के साथ ही ये सब जादू टूटने लगते हैं।

❐❐

अध्याय – 2 तुलसीदास

पाठ का सारांश

(1) कवितावली (उत्तरकांड से) का सारांश

'कवितावली' तुलसीदास द्वारा लिखा गया महत्वपूर्ण काव्य–ग्रंथ है जिसमें कवि ने कवित्त, सवैया छंदों का प्रयोग किया है। यहाँ कवि के तीन छंद संकलित किए गए हैं। इन छंदों से तत्कालीन युग की विसंगतियों का पता चलता है। सभी लोग पेट की खातिर अच्छे–बुरे कर्म करते हैं, बेटे–बेटी तक को बेच देते हैं। पेट की आग बड़वाग्नि से भी बड़ी होती है जो राम की कृपा से ही शांत हो पाती है। युगीन विसंगतियों का चित्रण दूसरे छंद में भी है। किसान को खेती नहीं है, भिखारी को भीख नहीं मिलती और नौकर को नौकरी प्राप्त नहीं होती। लोग रोज़गार से रहित हैं और एक–दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें? इस दरिद्रता रूपी रावण ने पूरी दुनिया को ग्रस लिया है। इससे मुक्ति तभी मिलेगी जब राम कृपा करेंगे। तीसरे छंद में तुलसी ने स्वयं को राम का गुलाम मानते हुए यह चुनौती दी है कि आप लोग (सांसारिक व्यक्ति) मुझे जो भी कहना चाहें, कहें, मुझे किसी का डर नहीं और न बेटा–बेटी का ब्याह करना है जो संसार से भयभीत रहूँ। माँग कर खाना और जहाँ अवसर मिले, पैर फैलाकर सो जाना, किसी से कुछ लेना–देना नहीं है। अत: मैंने राम का सेवक बनकर कोई गलत काम नहीं किया, दुनिया जो चाहे सो समझे।

(2) 'लक्ष्मण–मूर्च्छा और राम का विलाप' का सारांश

यह प्रसंग तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' के लंकाकांड से लिया गया है। राम–रावण युद्ध के प्रसंग में मेघनाद द्वारा लक्ष्मण को शक्ति (बाण) मारी गई जिससे वे मूर्च्छित हो गए। लंका से सुषेण वैद्य को लाया गया जिसने बताया कि संजीवनी बूटी का रस पिलाने से लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होगी। हनुमान संजीवनी बूटी (एक जड़ी–बूटी) लाने हेतु गए किंतु अर्धरात्रि बीतने पर भी जब वापस न आ सके तो राम अधीर होकर विलाप करने लगे कि लक्ष्मण ने प्रत्येक कष्ट में उनकी सहायता की है। वे उनके बिना किस मुख से अयोध्या जाएँगे। जब माताएँ लक्ष्मण के बारे में पूछेंगी तो वे क्या उत्तर देंगे? जब राम इस प्रकार विलाप कर रहे थे, तभी हनुमान आ गए। उन्होंने संजीवनी बूटी वैद्य को दी और उसने उसका रस लक्ष्मण को पिलाया तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हो गई। लक्ष्मण के ठीक होने का समाचार सुनकर रावण सिर धुनने लगा और फिर कुंभकरण को जगाकर उसे सब बात बताई। कुंभकरण रावण को सीता का अपहरण करने के कारण धिक्कारता है और कहता है कि ऐसा बुरा काम करने के बाद उसे अच्छे फल की इच्छा त्याग देनी चाहिए। तेरा यह कार्य घोर निंदनीय तथा राक्षस कुल का नाश करने वाला सिद्ध होगा।

❐❐

अध्याय – 3 फ़िराक गोरखपुरी

—रज़िया सज्ज़ाद जहीर

पाठ का सारांश

'रुबाइयाँ' का सारांश

उर्दू के प्रसिद्ध शायर 'फिराक गोरखपुरी' ने यहाँ एक वात्सल्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें एक माँ अपने शिशु को आँगन में खड़ी हाथों के झूले पर झुला रही है और बच्चा प्रसन्नता से किलकारी मार रहा है। माँ बच्चे को नहलाकर तैयार करती है, घुटनों में उसे दबाकर कपड़े पहनाती है और बच्चा माँ का मुँह निहारता है। दीवाली पर माँ चीनी के खिलौने लाती है, दीपक जलाती है तब उसके मुख पर गर्व और वात्सल्य की अनोखी चमक दिखती है। माँ बच्चे को शीशे में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर बहलाती है। रक्षाबंधन के दिन बहन भाई की कलाई पर चमकते तारों वाली राखी के धागे बाँधकर प्रसन्न होती है।

'गजल' का सारांश

इस गज़ल में शायर अपने व्यक्तिगत प्रेम और निराशा को व्यक्त करता है। प्रकृति ने चारों तरफ अपना सौंदर्य फैला रखा है। चाँद–तारे गुपचुप बातें करते हैं मगर कवि रोता है। उसकी तकदीर खराब है क्योंकि लोग उसे बदनाम करते हैं। इश्क डूबकर ही किया जाता है। फरिश्ते जब दुनिया के अच्छे–बुरे कर्मों का लेखा–जोखा तैयार करते हैं तब वह अपनी प्रेयसी की याद में शराब पीता है। फिराक यह भी स्वीकार करते हैं कि उनकी गजलों पर मीर की गज़लों का प्रभाव है।

❐❐

गद्य खंड

अध्याय - 1 पहलवान की ढोलक

—फणीश्वर नाथ 'रेणु'

पाठ का सारांश

सर्दी के मौसम में अमावस्या की ठंडी और अँधेरी रात के सन्नाटे में मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव वालों की हृदय विदारक सिसकियाँ, कराहने की आवाज़ व बच्चों के रोने की आवाज़ आती। सियारों व पेचकों की डरावनी आवाज़ कभी-कभी उस निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती। ऐसे समय में पहलवान लुट्टन शाम से सुबह तक अपनी ढोलक बजाकर मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरता रहता।

लुट्टन के माता-पिता नौ वर्ष की उम्र में ही चल बसे थे। विधवा सास ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। बचपन से कसरत करने के कारण बड़े होने पर पहलवान लगने लगा।

एक बार वह श्याम नगर के मेले में दंगल देखने गया। वहाँ पंजाब से चाँद सिंह पहलवान जिसे 'शेर के बच्चे' का टाइटल मिल चुका था, भी आया था। देशी नौजवान पहलवान उससे लड़ने की कल्पना भी नहीं कर पाते थे। लुट्टन ने बिना सोचे-समझे उसे दंगल की चुनौती दे डाली। चाँद सिंह और लुट्टन के मध्य दंगल का मुकाबला शुरू ही हुआ था कि श्याम नगर के वृद्ध राजा ने लुट्टन को कुश्ती से हटने को कहा। लेकिन लुट्टन की जिद के आगे उन्हें दंगल की इज़ाज़त देनी पड़ी। ढोल बाजे की आवाज़ के बीच दंगल शुरू हुआ। लुट्टन ने चाँद सिंह का दाँव काटकर उसकी गर्दन पकड़ ली। ढोल की आवाज़ 'चट्-चट्-धा' का अर्थ 'उठाकर' पटक दे लगाकर उसने चाँद सिंह को उठाकर पटक दिया। लुट्टन ने सबसे पहले ढोल को प्रणाम किया और फिर राजा साहब को गोद में उठा लिया। चारों ओर जय-जयकार होने लगी। राजा साहब ने लुट्टन को पुरस्कृत करने के साथ ही राज पहलवान नियुक्त कर लिया।

धीरे-धीरे लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने कुछ ही वर्षों में काला खाँ सहित सभी नामी पहलवानों को धूल चटा दी। पौष्टिक भोजन, व्यायाम और राजा साहब के स्नेह ने उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगा दिए। कोई उससे लड़ने का साहस न कर पाता। इसी तरह पंद्रह वर्ष बीत गए। लुट्टन की सास और उसकी पत्नी दोनों की मृत्यु हो गई। लुट्टन के दोनों बेटे अपने पिता के समान ही भावी पहलवान भी घोषित किए जा चुके थे। लुट्टन दोनों बेटों को दंगल के गुर सिखाया करता तथा मालिक को कैसे खुश रखा जाता है आदि की शिक्षा भी नित्य देता।

राजा साहब की मृत्यु के पश्चात् उनके विलायत से आए बेटे ने राजकाज सँभाला। घोड़े की रेस में दिलचस्पी रखने वाले राजकुमार ने पहलवानों को बोझ समझकर बाहर का रास्ता दिखाया। लुट्टन गाँव के बाहर झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। लड़के मज़दूरी कर जीवनयापन करने लगे। गाँव में अकाल पड़ने पर और मलेरिया व हैजे के प्रकोप से गाँव वाले बेहाल हो गए। रोज़ दो-तीन लाशें उठने लगीं। औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में लुट्टन की ढोलक ही संजीवनी शक्ति भरती थी। मरते हुए प्राणियों को आँखें मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती। एक दिन लुट्टन के दोनों बेटे भी महामारी की चपेट में आकर चल बसे। लुट्टन अपने दोनों बेटों को कंधे पर लादकर नदी में बहा आया। रात में फिर पहलवान की ढोलक की आवाज़ सुन लोग दंग रह गए, लेकिन एक रात जब ढोलक की आवाज़ सुनाई नहीं दी तो उसके रुग्ण शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश चित्त पड़ी है। एक शिष्य ने कहा कि गुरुजी की इच्छा थी कि जब मैं मर जाऊँ तो चिता पर मुझे चित्त नहीं पेट के बल सुलाना और ढोल बजा देना।

❐❐

अध्याय - 2 नमक

—रज़िया सज्ज़ाद जहीर

पाठ का सारांश

'नमक' कहानी हिंदुस्तान-पाकिस्तान के विभाजन के बाद सीमा के दोनों ओर के लोगों की मन:स्थिति के इर्द-गिर्द घूमती एक संवेदनात्मक कहानी है। सफ़िया एक बार अपने पड़ोसी के घर कीर्तन में गई। वहाँ उसने अपनी माँ के जैसी दिखने वाली एक सिक्ख महिला देखी। सफ़िया के पाकिस्तान जाने की बात जानकर वह महिला सफ़िया के पास आई और बातों ही बातों में उसने बताया कि उसका जन्म लाहौर में ही हुआ था। उसने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने का आग्रह किया।

लाहौर में सफ़िया के भाइयों, दोस्तों, जानकारों ने उसकी खूब खातिरदारी की। सभी उसके लिए उपहार लाए। धीरे–धीरे पंद्रह दिन बीत गए। इसी बीच सफ़िया ने लाहौरी नमक साथ ले जाने की बात अपने भाई को बताई जो पुलिस में था। भाई ने यह कहकर मना कर दिया कि नमक ले जाना गैरकानूनी है तथा भारत के पास हमसे ज्यादा नमक गया है। सफ़िया ने नमक को कीनुओं की टोकरी में ले जाने की योजना बनाई। उसने टोकरी की तह में नमक की पुड़िया छिपा दी ताकि कस्टम वालों को इसका पता न चल सके।

अगले दिन जब सफ़िया रेलवे स्टेशन पर प्रतीक्षालय में बैठी थी तब वह सोचने लगी कि उसे इस वह इस उपहार को छुपाकर नहीं ले जाना चाहिए। अत: उसने नमक की पुड़िया निकालकर अपने हैंडबैग में रख ली। कस्टम अधिकारी के पास जाकर उससे सारी बात बताई और पुड़िया निकालकर उसकी मेज़ पर रख दी। सारी बात सुनकर कस्टम अधिकारी ने पुड़िया को अच्छी तरह लपेटकर सफ़िया के बैग में रख दिया और कहा कि मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह निकल जाती है कि कानून को इसका पता तक नहीं चलता। इसके साथ ही उसने सफ़िया से कहा कि जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम देना और सिक्ख महिला से कहना कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ़्ता–रफ़्ता ठीक हो जाएगा। सभी से भावभीनी विदाई लेकर वह भारत रवाना हुई। अमृतसर में कस्टम की जाँच शुरू हुई तब सफ़िया ने कस्टम अधिकारी को सारी बात बता दी। कस्टम अधिकारी ने उसे साथ चलने को कहा। उसने बताया कि ढाका उसका वतन है। उसने अपने दोस्त द्वारा दी गई किताब दिखाई और कहा—विभाजन के समय वह ढाका में था। उसके यहाँ की डाभ की बात ही कुछ और है। उसने नमक की पुड़िया सफ़िया के बैग में रख दी और खुद उस बैग को उठाकर आगे–आगे चलने लगा। जब सफ़िया अमृतसर के पुल पर चढ़ रही थी, तब वह पुल की सबसे निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप खड़ा था। सफ़िया सोचने लगी कि किसका वतन कहाँ है? कस्टम के इधर या उधर। दोनों ओर की सीमाओं में एक प्रकार की भावनाओं वाले लोग रहते हैं लेकिन ये सीमाएँ उन्हें भावनाओं का आदान–प्रदान करने से रोकती हैं।

❐❐

अध्याय – 3 बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर

पाठ का सारांश

(i) श्रम–विभाजन और जाति–प्रथा

श्रम–विभाजन सभ्य समाज के लिए स्वीकार्य हो सकता है लेकिन जाति के आधार पर श्रमिकों का विभाजन किया जाना किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन किसी भी सभ्य समाज में नहीं किया गया है। जबकि भारतीय जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करने के साथ विभिन्न वर्गों को एक–दूसरे की अपेक्षा ऊँचा व नीचा भी मानती है। इसलिए जातिप्रथा श्रम विभाजन का रूप होने के बावजूद आपत्तिजनक है। श्रम–विभाजन जाति–प्रथा का स्वाभाविक विभाजन तभी माना जा सकता है जब यह लोगों की रुचि पर आधारित हो। उनमें व्यवसाय के प्रति कौशल विकसित हो। भारतीय जाति–प्रथा में श्रम–विभाजन व्यक्ति की रुचि या योग्यता के आधार पर न होकर माता–पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार गर्भधारण के समय ही कर दिया जाता है।

इस प्रकार के विभाजन में मनुष्य पेशे के अनुपयुक्त तथा अपर्याप्त होने पर जीवन भर उसी पेशे से बँधा रहता है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा नहीं बदल पाता। यह प्रथा आर्थिक पहलू से भी न्यायसंगत नहीं है तथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म शक्ति को दबाकर उसे निष्क्रिय बना देती है।

(ii) मेरी कल्पना का आदर्श समाज

लेखक के अनुसार, आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भाईचारे पर आधारित तथा लोकतांत्रिक होना चाहिए जिसमें अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो। लोगों को अपनी शक्ति के सक्षम और प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता भी शेष अन्य प्रकार की प्राप्त स्वतंत्रताओं के समान ही दी जाए। लेकिन जाति–प्रथा के प्रशंसक इसे स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि इसका अर्थ होगा, लोगों को व्यवसाय चुनने की आज़ादी देना। इसके अभाव में व्यक्ति दासता से मुक्त नहीं हो पाएगा। 'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। दूसरों के द्वारा निर्धारित व्यवहारों व कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना भी दासता ही है।

सभ्य समाज में स्वतंत्रता के साथ समता का होना भी अनिवार्य है। लेकिन समता के आलोचकों के अनुसार, चूँकि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, अत: उन्हें समान मानना गलत है। मनुष्य की क्षमता शारीरिक, वंश, परंपरा, सामाजिक परंपरा के रूप में माता–पिता की कल्याण कामना, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञानार्जन; मनुष्य के अपने प्रयत्न, इन तीन दृष्टियों से तय की जाती है। इन विभिन्नताओं के आधार पर लोगों के साथ असमान व्यवहार करना ठीक नहीं। सभी को आरंभ से ही समान अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए और समान व्यवहार करना चाहिए। राजनीतिज्ञ भी सभी के साथ एक समान व्यवहार करता है क्योंकि अधिक जनसंख्या व समय की कमी के कारण वह आवश्यकताओं व क्षमताओं के आधार पर अलग–अलग प्रकार के व्यवहार की आवश्यकता होने पर समाज को वर्गों व श्रेणियों में नहीं बाँट सकता। अत: वह समान व्यवहार्य सिद्धांत का ही पालन करता है और यही उसके व्यवहार की एक मात्र कसौटी है।

❐❐

अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2

अध्याय - 1 विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न

(1) अतीत में दबे पाँव

(ओम थानवी)

लेखक ओम थानवी ने 'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ में ऐतिहासिक सिंधु घाटी की सभ्यता की ऐतिहासिकता से पाठकों को परिचित कराया है। प्रस्तुत रचना ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है, जो अब तक की जानकारी में भारतीय भूमि पर ही नहीं, बल्कि विश्व फलक पर मान्य इस सभ्यता को उतने ही सुनियोजित ढंग से पुनर्जीवित करता है, जितने सुनियोजित ढंग से उसके दो महान नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो बसे हुए थे। लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान यह पाया कि इन दोनों ही नगरों का सौंदर्यबोध राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाज पोषित था। वह सभ्यता ताकत के बल पर अनुशासित होने के स्थान पर अपनी समझ से अनुशासित थी। उसमें भव्यता थी, पर आडंबर नहीं। लेखक के विचार से आधुनिक व्यवस्था के आ जाने से हमारी पुरानी संस्कृति की विशेषताएँ विकास की भेंट चढ़ गई हैं।

पाठ का सारांश

सिंधु सभ्यता का केंद्र—प्रस्तुत पाठ में पाकिस्तान स्थित मोहन जोदड़ो और हड़प्पा शहरों का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। मोहन जोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का केंद्र था। यह नगर ताम्रकाल के शहरों में अपनी बड़ी-बड़ी गलियों व इमारतों की अनुभूति कराते हुए सबसे बड़ा नगर रहा होगा। इसकी जनसंख्या लगभग 85,000 रही होगी। खुदाई से प्राप्त मुहरें, इमारतें, खिलौने व बर्तन आदि इस सभ्यता की जानकारी देते हुए यह बताते हैं कि यह शहर किस प्रकार पूर्णत: योजना के अनुसार बसाया गया था।

नगर-नियोजन व बौद्ध स्तूप—वर्ष 1922 में बौद्ध स्तूप के आस-पास की गई खुदाई में ईसा पूर्व के निशान प्राप्त हुए। भारत की सिंधु घाटी सभ्यता सबसे प्राचीन सभ्यता है। इसका वैज्ञानिक आधार पाए जाने पर मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के अनुरूप ही इस सभ्यता को आँका गया है। यह शहर भारत का लैंडस्केप है, क्योंकि इस शहर को बनाने व यथार्थ स्वरूप देने का कार्य पूर्व नियोजित व्यवस्था के अनुसार एक संपूर्ण प्रणाली के अनुरूप किया गया होगा। इस शहर के दक्षिण में कुछ कामगारों की बस्तियाँ हैं।

संपन्न वर्ग की बस्तियाँ—इस सभ्यता की सबसे अच्छी व्यवस्था यह थी कि वह समाज को विकसित करने के लिए कार्य करती थी। यह सभ्यता सबसे सुंदर थी, और पूर्णत: विकसित थी इसीलिए आज भी हम इस सभ्यता का उदाहरण देते हैं। इस सभ्यता में संपन्न वर्ग की बस्तियाँ पाई गई हैं। 5000 सालों में निम्न वर्ग की बस्तियाँ मिट गई हैं।

महाकुंड व सामुदायिक केंद्र—यहाँ पर पक्की ईंटों का एक कुंड है, जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबंध पाया गया। सामुदायिक केंद्र जैसा एक सभा-भवन इसके दक्षिण में स्थित है, जो कि बीस खंभों पर आधारित है।

फसल—बैलगाड़ियों का प्रयोग यहाँ ढुलाई के लिए होता था। यहाँ अनेक प्रकार की फसलें; जैसे—गेहूँ, जौ, सरसों, चने आदि का उत्पादन किया जाता था। अधिकतर कामगार खेत में ही काम करते थे। मकानों में सभी प्रकार की सुविधाएँ मौजूद थीं।

जल संस्कृति—यहाँ पानी की निकासी के उचित प्रबंधन के कारण किसी भी रूप में बीमारी का प्रकोप अधिक नहीं हो सकता था, क्योंकि नालियाँ आदि उचित रूप में ढकी हुई थीं। घरों के भीतर से पानी या मैले की नालियाँ बाहर हौदी तक आती हैं और फिर नालियों के साथ जुड़ जाती हैं। वे नालियाँ अधिकतर बंद हैं। यहाँ पर कुओं का प्रबंध आवश्यकतानुसार उचित रूप में किया गया था।

अजायब घर—मोहन जोदड़ो में स्थित इससे संबंधित अजायब घर छोटा ही है, जैसे वह किसी कस्बाई स्कूल की इमारत हो। यहाँ पर अधिक सामान नहीं है। अहम् चीज़ें कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में ही हैं। काला पड़ गया गेहूँ, मुहरें, ताँबे और काँसे के बर्तन, चाक पर बने विशाल मृदभांड, उन पर काले भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, ताँबे का आईना और पत्थर के औज़ार आदि के बारे में अली नवाज़ बताता है कि यहाँ पर सोने के गहने भी थे, पर वे चोरी हो गए। अजायब घर में प्रदर्शित चीज़ों में औज़ार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं हैं। यहाँ कुछ सूइयाँ भी मिली हैं। सूइयों के अलावा हाथी दाँत और ताँबे के सुए, नर्तकी तथा दुशाला ओढ़े दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति भी मिली है, पर इनका प्रमाण मिलना अब मुश्किल है, क्योंकि सिंधु नदी के पानी से खुदाई के स्थान पर दलदल की समस्या उत्पन्न हो गई है, इसीलिए खुदाई को अब बंद करना पड़ा है। लेखक ओम थानवी ने इस सभ्यता के इतिहास को इतने सुंदर रूप में वर्णित किया है, जैसे—मोहनजोदड़ो सभ्यता उसकी (लेखक की) जानी पहचानी हो।

(2) डायरी के पन्ने

(ऐन फ्रैंक)

ऐन फ्रैंक द्वारा लिखित यह डायरी मूलरूप से 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' शीर्षक से वर्ष 1952 में प्रकाशित हुई, जो इतिहास के सबसे आतंकप्रद और दर्दनाक अध्याय के साक्षात् अनुभव को बयान करती है। हम यहाँ उस भयावह दौर को किसी इतिहासकार की निगाह से नहीं, सीधे भोक्ता की निगाह से देखते हैं और यह भोक्ता ऐसा है जिसकी समझ एवं संवेदना बहुत गहरी तो है ही, उम्र के साथ आने वाले दूषणों से पूरी तरह अछूती भी है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यहूदियों पर ही सबसे अधिक अत्याचार हुए थे। प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने जीवन में आए संकटों का मार्मिक ढंग से वर्णन करने के साथ ही स्त्रियों पर हुए अन्याय का भी वर्णन किया है। इस डायरी की लेखिका के पिता ओटो फ्रैंक ने लेखिका की अकाल मृत्यु के बाद सन् 1947 में पहली बार डच भाषा में छपवाया था। ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी को अपनी प्यारी गुड़िया 'किट्टी' को संबोधित करते हुए लिखा है। यह डायरी यहूदियों पर ढाए गए जुल्मों का एक जीवंत ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

पाठ का सारांश

8-10 जुलाई, 1942—लेखिका ने 8 जुलाई, 1942 से अपनी डायरी लिखना प्रारंभ किया। युद्ध के दौरान दो यहूदी परिवार दो वर्ष तक एक गुप्त स्थान पर छिपे रहे। इनमें से एक लेखिका का परिवार था जिसमें 13 वर्षीया ऐन (लेखिका), उसके माता-पिता और उसकी बड़ी बहन मार्गोट थी, जबकि दूसरा परिवार था वान दंपति और उनका सोलह साल का लड़का पीटर। इनके साथ एक और व्यक्ति रहता था जिसका नाम मिस्टर डसेल था। लेखिका ने डर, आतंक, भूख, गरीबी, मानवीयता, प्रेम, घृणा, प्यास, पकड़े जाने का खौफ़ आदि का जीवंत वर्णन किया है। ये सभी लेखिका के पिता के दफ़्तर में छिपे थे। 9 तारीख को दफ़्तर की बिल्डिंग के बारे में लिखा गया। 10 तारीख को लेखिका ने दिनभर अपने पिता के साथ मिलकर दफ़्तर के कमरे की सफाई की और सामान व्यवस्थित किया।

28 नवंबर व 19 मार्च, 1942—28 नवंबर को लेखिका ने लिखा कि उसने वह समय किस प्रकार डर-डरकर बिताया है। मिस्टर डसेल, जो कि एक अच्छे खासे चुगलखोर हैं, लेखिका की सभी बातें उसकी मम्मी को बता देते हैं और वही बातें ऐन (लेखिका) की माँ उसे उपदेश के रूप में सुनाती है। ऐन ने डायरी में अपनी गलतियों के बारे में भी लिखा है, पर वह उन पर या तो हँस देती है या फिर रो देती है। वह चाहती है कि अपनी सारी गलतियाँ वह धीरे-धीरे ठीक कर ले। 19 मार्च को लेखिका ने लिखा कि हज़ार गिल्डर के नोट को अवैध मुद्रा घोषित किए जाने से कालाबाज़ारी करने वालों को एक बड़ा झटका लगा।

23 एवं 28 जनवरी, 1944—23 जनवरी को ऐन फ्रैंक ने लिखा कि उसे राजसी परिवारों की वंशावली में अच्छी रुचि हो गई है। वह रविवार को फिल्मी कलाकारों की तस्वीरें अलग करने व देखने में समय व्यतीत करती है। ऐन फ्रैंक को बालों का स्टाइल बनाना बहुत पसंद है।

28 जनवरी को ऐन ने लिखा कि वह मिसेज़ वानदान की हर कहानी को सुनकर ऊब चुकी है, क्योंकि वह कहानी उसने पहले भी सुन रखी है। मिस्टर डसेल भी पुरानी बातें बताते रहते हैं; जैसे—घोड़ों की दौड़ें, लीक करती नावें और चार साल की उम्र में तैरने की बातें इत्यादि।

29 मार्च, 1944—29 मार्च को लेखिका ने लिखा कि कैबिनेट मंत्री बोल्के स्टीन ने लंदन से डच प्रसारण में घोषणाएँ करते हुए कहा कि युद्ध के बाद युद्ध का वर्णन करने वाली डायरियों तथा पत्रों को इकट्ठा किया जाएगा। यह सुनकर ऐन का मन आनंद से भर गया। ऐन ने कहा कि डचों की नैतिकता अच्छी नहीं है। वे सभी भूखे हैं, उनके यहाँ एक-दो हफ़्तों का राशन दो दिन भी नहीं चल पाता। ब्लैक मार्केट में जूते का तला 7.50 गिल्डर का मिलता है। सौभाग्य से बहुत कम डच लोग गलत पक्ष में हैं।

11 अप्रैल, 1944—ऐन फ्रैंक ने 11 अप्रैल को डायरी में लिखा कि शनिवार को गोलाबारी शुरू हो गई। तेज़ धमाका सुनने के बाद ही ऐन छत से नीचे उतरी थी। ऐन के चेहरे का रंग फीका पड़ गया था और उसके पापा ने उसे जल्दी ही नीचे आने को कहा था। घर में सभी लोग परेशान थे, क्योंकि सभी को पता था कि हालात और अधिक बिगड़ने जा रहे हैं।

13 जून, 1944—13 जून को ऐन फ्रैंक ने डायरी में लिखा कि सभी डच लोग ब्रिटेन का मज़ाक उड़ाते हैं और उन्हें कायर भी कहते हैं। पीटर के बारे में ऐन कहती है कि वह केवल एक अच्छा दोस्त है, क्योंकि वह यह मानती है कि लेखिका का स्वभाव पीटर के स्वभाव से बिल्कुल भिन्न है। ऐन कहती है कि लोग उसे घमंडी कहते हैं, परंतु वह है नहीं। ऐन अपनी कमियों को जानती भी है और उन्हें ठीक भी करना चाहती है, जबकि लोग ऐसा कह भी नहीं सकते। लेखिका लिखती है कि नारियाँ केवल बच्चे पैदा करने की मशीन नहीं हैं। नारियों ने ही समाज को बनाया है। फिर समाज उन्हें उचित सम्मान क्यों नहीं देता? औरतों की मुश्किलों को पुरुष कभी झेल भी नहीं सकते, इसलिए इन मुश्किलों या तकलीफ़ों का अनुमान लगाना भी उनके लिए असंभव है। लेखिका को यह विश्वास है कि अगली सदी में औरतों को अधिक सम्मान और गौरव की दृष्टि से देखा जाएगा।

❐❐